



अभिव्यक्ति

राजभाषा विभाग,
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे,
रायपुर मंडल
अंक : 13, अप्रैल - 2022

मार्गदर्शक श्याम सुंदर गुप्ता, मंडल रेल प्रबंधक	मुख्य संपादक लोकेश विश्नोई, अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी	संपादक निकेश कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी	उप संपादक मनोज कुमार साहू, वरिष्ठ अनुवादक
---	---	---	---

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर के तत्वाधान में हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन

दिनांक 08.04.2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर के तत्वावधान में रेल अधिकारी क्लब 'उल्लास', शिवनाथ रेल विहार, डब्ल्यू. आर. एस. कॉलोनी, रायपुर में एक हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न शहरों से आए 05 प्रख्यात कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर एवं मंडल रेल प्रबंधक श्री श्यामसुंदर गुप्ता ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया।



इसके पश्चात अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री लोकेश विश्नोई ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि – “आज ऐसा प्रतीत हो रहा है कि हिंदी की डोर से नराकास के सभी केन्द्रीय कार्यालय एवं संगठन सचमुच एक साथ बंधी हुई है। समन्वय की यह डोर नराकास, रायपुर को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में निश्चित रूप से सहायक होगी।”

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री श्यामसुंदर गुप्ता ने कवियों को शाल एवं श्रीफल देकर सम्मानित किया। उन्होंने अपने

अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि – “संघ की राजभाषा नीति के सुचारू कार्यान्वयन में नराकास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आज कवि सम्मेलन के आयोजन के द्वारा नराकास, रायपुर साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है।

आमंत्रित कवियों में श्री बांके बिहारी, आसनसोल, श्री किशोर तिवारी, भिलाई, श्री आलोक शर्मा, दुर्ग, श्रीमती किरण सोनी, कोरबा तथा श्री बंशीधर मिश्रा, अकलतरा शामिल थे। ये सभी आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं सोनी टीवी में प्रायः देखे-सुने जाते रहें हैं तथा इन्हें अनेक साहित्य सम्मान एवं अलंकरण प्राप्त हुए हैं। कवियों द्वारा अपनी-अपनी प्रसिद्ध कविताओं का पाठ किया गया जिसका सभी श्रोताओं ने खूब आनंद उठाया। इन कवियों की कविताओं के कुछ अंश नीचे प्रस्तुत हैं।
आसनसोल से पधारे हुए कवि श्री बांके बिहारी ने कहा कि -

“बीबी हो, बीबी रहो, शौहर न बनो।
रोज-रोज घर छोड़ने की धमकी,
बात-बात में मुनव्वर न बनो।”

बंशीधर मिश्रा, अकलतरा -
जीवन में अगर खुशी का अमरत्व चाहिये
तो हृदय में हंसी का कुछ तत्व चाहिये।
बहुत विरल है करतल ध्वनि आपकी
जोरदार तालियों का घनत्व चाहिये।

किशोर तिवारी, गीतकार, भिलाई -
बेर शबरी के सारे थे जूठे सही
खाने वाले मगर फिर भी रूठे नहीं।
राम खाते रहे मुस्कुराते रहे
प्रेम के भाव होते हैं झूठे नहीं।

आलोक शर्मा, दुर्ग -
भगवान का दिया कभी अल्प नहीं होता,
बीच में टूटे वह संकल्प नहीं होता।
पराजय को लक्ष्य से दूर रखना यारों,
क्योंकि विजय का कोई विकल्प नहीं होता।

किरण सोनी, कोरबा -
लाल गुलाबी केसरी रंगों में खो जाऊँ
जी करता है आज मैं साजन की हो जाऊँ

कार्यक्रम के दौरान नगर राजभाषा
कार्यान्वयन समिति, रायपुर के सदस्य

कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख तथा उनके प्रतिनिधिगण, अध्यक्ष - सेक्रो/रायपुर श्रीमती राधा गुप्ता, सेक्रो/रायपुर के पदाधिकारीगण, मंडल के रेल अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। अंत में सचिव, नराकास, रायपुर एवं राजभाषा अधिकारी श्री निकेश कुमार पाण्डेय द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की गई।



भारत रत्न डॉ. भीम राव आम्बेडकर की 131 वीं जयंती मनाई गई

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर मंडल द्वारा दिनांक 14 अप्रैल 2022 को संविधान निर्माता, भारत रत्न डॉ. बाबा साहेब भीम राव आम्बेडकर की 131 वीं जयंती मनाई गई। मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता ने कार्यक्रम के प्रारंभ में भारत रत्न डॉ. भीम राव आम्बेडकर एवं भगवान बुद्ध के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये। तत्पश्चात सेवानिवृत्त मुख्य कर्मचारी एवं कल्याण निरीक्षक श्री डी पी लोखंडे द्वारा बुद्ध वंदना प्रस्तुत की गई।



मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता ने सभी को इस अवसर पर बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि महापुरुषों को याद किया जाना हम सबका दायित्व है। डॉ. आम्बेडकर अद्वितीय प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। उन्होंने विश्व के 02 प्रतिष्ठित संस्थानों से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी। विधि एवं राजनीति विज्ञान की उच्चकोटि का जानकार होने के साथ-साथ वे कई भाषाओं के ज्ञाता भी थे। उनको हमारा देश ही नहीं पूरा विश्व नमन करता है। बाबा साहब ने शिक्षा और सभी के अधिकार को सुरक्षित रखने के महत्व को समझा और इसका प्रसार भी जन मानस में किया, जिसके कारण ही आज हमारे देश में विविधता होते हुए भी हम एक

सूत्र में बंधे हुए हैं। बाबा साहेब आम्बेडकर अंधकारग्रस्त मानवता के लिए एक अमर ज्योति थे, हैं और रहेंगे। उन्हें नमन करते हुए हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम देश को समृद्ध बनाएंगे और देश की उन्नति में योगदान करेंगे।

अखिल भारतीय अनुसूचित जाति जनजाति रेलवे कर्मचारी एसोसिएशन के मंडल कार्यकारी सचिव श्री वाय. के. मिहौलिया द्वारा डॉ. आम्बेडकर के जीवन, उनके आदर्श, शिक्षा के महत्व के प्रति उनके विचार तथा उनके द्वारा किए गए संघर्ष के महत्व पर प्रकाश डाला गया। साथ ही उन्होंने रायपुर रेल मंडल द्वारा डॉ. आम्बेडकर की जयंती पर किए गए इस आयोजन की भी सराहना की और कहा कि हम सब एक परिवार के रूप में कार्य करते हैं और यहां सभी का सहयोग अतुलनीय है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे कांग्रेस यूनियन के मंडल संयोजक श्री डी. विजय कुमार, अन्य पिछड़ा वर्ग एसोसिएशन के मंडल प्रेसिडेंट श्री एच. प्रसाद राव एवं अन्य पदाधिकारियों ने भी बाबा साहेब के जीवन एवं संघर्ष के प्रति अपने अमूल्य विचार रखे। कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री उदय कुमार भारती द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

द.पू.म.रेलवे में डीपीडब्ल्यूसीएस की उपयोगिता

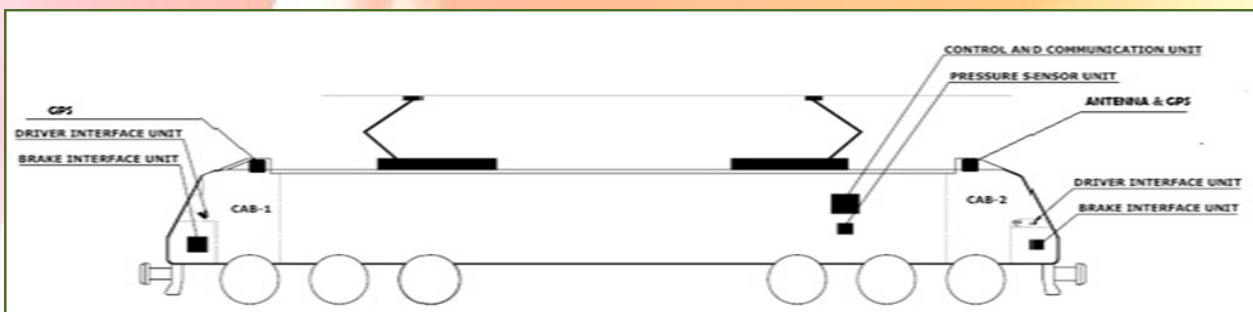
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रायपुर मंडल में स्थित विद्युत लोको शेड, भिलाई की स्थापना 24 जनवरी, 1970 को हुई थी। वर्तमान में विद्युत लोको शेड, भिलाई के पास कुल 54 डीपीडब्ल्यूसीएस सक्षम तीन फेज इंजनों की कुल होलिंग 54 है। 54 में से 10 मैसर्स आर्क मेक तथा 44 मैसर्स लोटस मेक के हैं।

डिस्ट्रिब्यूटेड पावर से तात्पर्य ट्रेन की पूरी लंबाई में मध्यवर्ती बिंदुओं पर लोकोमोटिव के भौतिक वितरण से है। डीपीडब्ल्यूसीएस की परिकल्पना आरएफ संचार के माध्यम से लोको के बीच कपलिंग प्रदान करने के लिए की गई है। वितरण शक्ति की अवधारणा को लंबी दूरी की ट्रेनों को परिचालित करने के लिए विकसित किया गया था जहां इसके परिचालन के लिए अर्थ की आवश्यकता पड़ती थी। डीपीडब्ल्यूसीएस से लैस होने के कारण अब 03 कि.मी. के दायरे एक साथ कई ट्रेनों को कुशलतापूर्वक और संचार में हानि / हस्तक्षेप के बिना संचालित किया जा सकता है। लीड लोको के फीडबैक के साथ ट्रेन ब्रेक लगाना और छोड़ना, 406 और 424 मेगाहर्ट्ज यूएचएफ लाइसेंस प्राप्त बैंड में काम करना इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं। लोअर ड्राफ्ट/बफ फोर्स कम हैं

बी.पी. कंटीन्यूटी चेक एल्गोरिथम का उपयोग करके डीपीडब्ल्यूसीएस सिस्टम यह सत्यापित करने में सक्षम है कि कॉन्फिगर किए गए रिमोट लोकोमोटिव एक ही फॉर्मेशन में जुड़े हुए हैं या नहीं। इस प्रक्रिया में तीन चरण होते हैं। गुपिंग प्रक्रिया शुरू करने के बाद, सिस्टम सत्यापित करेगा कि लीड और रिमोट इंजनों में ब्रेक पाइप का दबाव $4.5 \text{ किग्रा/सेमी}^2$ से अधिक है। अन्यथा सिस्टम लोको पायलट को "बीपी कंटीन्यूटी जांच के लिए रिलीज ब्रेक" का संदेश प्रदर्शित करेगा। लीड और रिमोट लोको में $4.5 \text{ किग्रा / सेमी}^2$ से अधिक बीपी की पुष्टि के बाद, सिस्टम "बीपी कंटीन्यूटी जांच के लिए फुल सर्विस के लिए अप्लाय ब्रेक" का संदेश पायलट को प्रदर्शित करेगा। लीड और रिमोट लोको में $3.2 \text{ किग्रा/सेमी}^2$ से कम बीपी की पुष्टि होने के बाद, सिस्टम "बीपी कंटीन्यूटी जांच के लिए रिलीज ब्रेक" संदेश लोको पायलट को दिखाएगा।



लोकोमोटिव में डीपीडब्ल्यूसीएस उपकरणों के स्थान :-



डीपीडब्ल्यूसीएस के लाभ :-

- डीपीडब्ल्यूसीएस सक्षम लोको की मदद से लॉन्ग हॉल ट्रेनों को सिंगल ऑपरेटर के साथ कई लोको को जोड़कर चलाया जा सकता है जिससे मानव शक्ति और समय की बचत होती है।
- उच्च ट्रेक्टिव प्रयास उपलब्ध।
- अल्प कपलर बल।

"डीपीडब्ल्यूसीएस सक्षम लोकोमोटिव की मदद से, एनाकोंडा, शेषनाग और वासुकी जैसी लॉन्ग हॉल ट्रेनों को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में सफलतापूर्वक चलाया गया था"।

खिलौनों का बाजार

जब भी भारत में निर्माण को बढ़ावा देने और चीन के प्रभुत्व को कम करने की बात होती है, तो एक बात हमेशा उठायी जाती है कि हमारे यहां खिलौने तक तो बनते नहीं, सारे चीन से आयात किये जाते हैं। बात एकदम ठीक है.....हम खिलौने जैसी छोटी चीज तक तो बना नहीं पाते.....फिर ये मोबाइल फोन, सेमीकंडक्टर, वेफर्स, इलेक्ट्रॉनिक्स की बातें करनी बेमानी हो जाती है। अब सवाल है कि क्या भारत अब खिलौने बना रहा है? चीन पर हमारी निर्भरता कितनी कम या ज्यादा हुई है? क्या 'आत्मनिर्भर भारत' या 'वोकल फॉर लोकल' एक चुनावी जुमला है या जमीन पर कुछ हुआ भी है? किसी भी क्षेत्र को बदलने के लिए पॉलिसी बनानी पड़ती है, भारत सरकार ने खिलौना निर्माण को बढ़ावा देने के लिए सबसे पहले ये 4 कदम उठाए।

1. आयात किये जाने वाले खिलौनों पर कस्टम ड्यूटी 20% से बढ़ाकर 60% की।
2. देशी खिलौना निर्माणकर्ताओं को कई तरह की टैक्स और अनुपालन संबंधी रियायतें दी गई। इसकी वजह से करीब 8366 माइक्रो, स्मॉल और मीडियम इंटरप्राइजेज पंजीकृत हुए।
3. जनवरी 2021 से खिलौना गुणवत्ता नियंत्रण नीति लागू की गई।
4. खिलौना निर्माण में 100% एफडीआई लागू किया गया।

इन कदमों के लागू होने के बाद से चीन से खिलौने का आयात काफी कम हो गया है क्योंकि भारत में अब वही खिलौने बिकेंगे जो भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के मानक के अनुरूप होंगे। खिलौना विनिर्माता के लिए 'आईएसआई' मार्क का इस्तेमाल करने के लिए बीआईएस से लाइसेंस लेना अनिवार्य है और अभी तक बहुत ही कम चीनी कंपनियों ने ये लाइसेंस लिए हैं क्योंकि इनके नियम काफी सख्त हैं। सरकार ने आयातित खिलौनों के कंसाइनमेंट की पोर्ट पर ही गुणवत्ता जाँच करने की व्यवस्था कर दी है। नमूना में कुछ भी गलत होता है तो पूरा कंसाइनमेंट या तो वापस भेज दिया जाता है या फिर आयातकर्ता के खर्च पर उसे यहीं डंप कर दिया जाता है। मतलब यह है कि वे सामान बाजार में नहीं आते इस वजह से आयातकर्ता भी अब घटिया खिलौने आयात नहीं कर रहे हैं।

अब आते हैं तथ्यों पर कि आखिर इन कदमों से कितना बदलाव हुआ है।

1. वर्ष 2018-19 में भारत ने चीन से \$451.71 मिलियन के खिलौने आयात किये थे, वहीं 2020-2021 में ये आंकड़ा गिर कर \$206.11 मिलियन ही रह गया।
2. वर्ष 2018 तक भारत में करीब 75-80% खिलौने चीन के होते थे, लेकिन अब लोकल खिलौनों ने वापसी करते हुए 50% से ज्यादा बाजार पर कब्जा कर लिया है।
3. लगभग 8000 विनिर्माण इकाइयों में 30 लाख लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष काम मिलना शुरू हो गया है।
4. कर्नाटक, उत्तरप्रदेश, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और अन्य कई स्थान खिलौना विनिर्माण के हब बन गए हैं।
5. वर्ष 2019-20 में भारत का खिलौना एक्सपोर्ट 130 मिलियन अमरीकी डॉलर था, जो जल्द ही 500 मिलियन अमरीकी डॉलर से ज्यादा होगा।
6. वर्ष 2019-2020 तक भारत का खिलौना मार्केट करीब 1.2 बिलियन अमरीकी डॉलर का था, जो 2025 तक 3 बिलियन अमरीकी डॉलर के होने की संभावना है। भारत के कुछ जाने माने खिलौना निर्माणकर्ता हैं -

ब्रेनस्मिथ, बडीज, क्लेवर क्यूब्स, सिनसेई, फनकार्प डॉट इन, दि स्टोरी मर्चेन्ट, वर्णम क्राफ्ट्स कलेक्शन, विन मैजिक टॉयज, सनलॉर्ड, दि मिशन कंपनी इंडिया, फन स्कूल, ऑफ्टर स्कूल टॉयज, जेफिर टॉय मेकर्स, अदिति टॉयज, एक्सप्लोरर, पिकॉक टॉयज, सन्नी टॉयज, एकोप्ले, स्कूडल, सेंटी टॉयज, खन्ना टॉयज।

इसके अलावा दुनिया की सबसे बड़ी टॉयज रिटेल चैन 'Hemleys' भी अब रिलायंस ने खरीद ली है.....तो अब हमारे पास मांग भी है, निर्माण भी है और रिटेल नेटवर्क भी है.....आपको करना सिर्फ एक काम है, जब भी अपने बच्चों के लिए खिलौने लेने जाएं, सिर्फ भारतीय खिलौने ही खरीदें।

अनुमान है कि 2030 तक वैश्विक खिलौनों की मांग का 5-7% भारत पूर्ति करेगा जो कि वर्तमान में 1% के आस पास है।

संकलनकर्ता - लोकेश विश्नोई

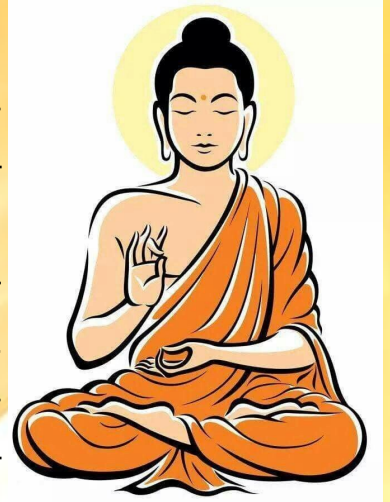
अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन)

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर

ज्ञान-धारा

एक बार भगवान बुद्ध से उनके शिष्य आनंद ने पूछा- 'भगवन् ! जब आप प्रवचन देते हैं तो सुनने वाले नीचे बैठते हैं और आप ऊंचे आसन पर बैठते हैं, ऐसा क्यों?' भगवान बुद्ध बोले- 'ये बताओ कि पानी झरने के ऊपर खड़े होकर पिया जाता है या नीचे जाकर?' आनंद ने उत्तर दिया- 'झरने का पानी ऊंचाई से गिरता है, अतः उसके नीचे जाकर ही पानी पिया जा सकता है।'

भगवान बुद्ध ने कहा- 'तो फिर यदि प्यासे को संतुष्ट करना है तो झरने को ऊंचाई से ही बहना होगा न?' आनंद ने 'हां' में उत्तर दिया। यह सुनकर भगवान बुद्ध बोले- 'आनंद ! ठीक इसी तरह यदि तुम्हें किसी से कुछ पाना है तो स्वयं को नीचे लाकर ही प्राप्त कर सकते हो और तुम्हें देने के लिए दाता को भी ऊपर खड़ा होना होगा। यदि तुम समर्पण के लिए तैयार हो तो तुम एक ऐसे सागर में बदल जाओगे, जो ज्ञान की सभी धाराओं को अपने में समेट लेता है।'



संघर्ष का सौंदर्य

मिट्टी ने मटके से पूछा- 'मैं भी मिट्टी तू भी मिट्टी, परंतु पानी मुझे बहा ले जाता है और तुम पानी को अपने में समा लेते हो. वह तुम्हें गला भी नहीं पाता, ऐसा क्यों?' मटका हंसकर बोला- 'यह सच है कि तू भी मिट्टी है और मैं भी मिट्टी हूं, पर मेरा संघर्ष अलग है. पहले मैं पानी में भीगा, पैरों से गूंथा गया फिर चाक पर चला कुम्हार के थापी की चोट, आग की तपन को झेला। संघर्ष झेलकर पानी को अपने में रखने की ताकत मैंने पायी।

मंदिर की सीढ़ियों पर जड़े पत्थर ने मूर्ति के पत्थर से पूछा- 'भाई तू भी पत्थर मैं भी पत्थर पर लोग तुम्हारी पूजा करते हैं और मुझे पैरों से रौंदकर, बिना ध्यान दिये चलते हैं. ऐसा क्यों?

मूर्ति के पत्थर ने उत्तर दिया- क्या तू मेरे संघर्ष को जानता है? मैंने इस शरीर पर कितनी छैनियों के प्रहार सहे हैं, मुझे कई बार घिसा गया है, मार और संघर्ष की पीड़ा को सहकर ही मैं इस रूप में आया हूं. संघर्षों की भट्टी में तपकर ही 'जीवन' स्वर्ण बनता है।

परिश्रम के साथ धैर्य भी

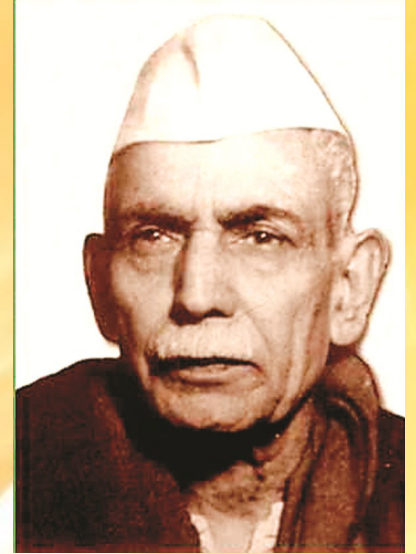
एक बार भगवान बुद्ध अपने अनुयायियों के साथ किसी गांव में उपदेश देने जा रहे थे। उस गांव से पूर्व ही मार्ग में उन लोगों को जगह-जगह बहुत सारे गड्ढे खुदे हुए मिले। बुद्ध के एक शिष्य ने उन गड्ढों को देखकर जिज्ञासा प्रकट की, आखिर इस तरह गड्ढे के खुदे होने का तात्पर्य क्या है?

बुद्ध बोले, पानी की तलाश में किसी व्यक्ति ने इतने गड्ढे खोदे हैं। यदि वह धैर्यपूर्वक एक ही स्थान पर गड्ढा खोदता तो उसे पानी अवश्य मिल जाता। पर वह थोड़ी देर गड्ढा खोदता और पानी न मिलने पर दूसरा गड्ढा खोदना शुरू कर देता।

व्यक्ति को परिश्रम करने के साथ धैर्य भी रखना चाहिए।

माह के साहित्यकार - माखनलाल चतुर्वेदी

जन्म	: 04 अप्रैल 1889
निधन	: 30 जनवरी 1968
जन्म स्थान	: बाबई, होशंगाबाद (मध्यप्रदेश)
उपनाम	: एक भारतीय आत्मा
प्रमुख कृतियाँ	: ' कृष्णार्जुन युद्ध ', ' हिमकिरीटिनी ', ' साहित्य देवता ', ' हिमतरंगिनी ', ' माता ', ' युगचरण ', ' समर्पण ', ' वेणु लो गुँजे धरा ', ' अमीर इरादे ', ' गरीब इरादे ' आदि ।
विविध	: साहित्य अकादमी पुरस्कार (1949)



प्यारे भारत देश

प्यारे भारत देश

गगन-गगन तेरा यश फहरा

पवन-पवन तेरा बल गहरा

क्षिति-जल-नभ पर डाल हिंडोले

चरण-चरण संचरण सुनहरा

ओ ऋषियों के त्वेष

प्यारे भारत देश ॥

वेदों से बलिदानों तक जो होड़ लगी

प्रथम प्रभात किरण से हिम में जोत जागी

उतर पड़ी गंगा खेतों खलिहानों तक

मानो आँसू आये बलि-महमानों तक

सुख कर जग के क्लेश

प्यारे भारत देश ॥

तेरे पर्वत शिखर कि नभ को भू के मौन इशारे

तेरे वन जग उठे पवन से हरित इरादे प्यारे !

राम-कृष्ण के लीलालय में उठे बुद्ध की वाणी
काबा से कैलाश तलक उमड़ी कविता कल्याणी
बातें करे दिनेश

प्यारे भारत देश॥

जपी-तपी, संन्यासी, कर्षक कृष्ण रंग में डूबे
हम सब एक, अनेक रूप में, क्या उभरे क्या ऊबे
सजग एशिया की सीमा में रहता केद नहीं
काले गोरे रंग-बिरंगे हममें भेद नहीं

श्रम के भाग्य निवेश

प्यारे भारत देश॥

वह बज उठी बासुँरी यमुना तट से धीरे-धीरे
उठ आई यह भरत-मेदिनी, शीतल मन्द समीरे
बोल रहा इतिहास, देश सोये रहस्य है खोल रहा
जय प्रयत्न, जिन पर आन्दोलित-जग हँस-हँस जय बोल रहा,
जय-जय अमित अशेष
प्यारे भारत देश ॥

पाठकों की प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं । कृपया अपने सुझाव व्हाट्सएप्प नंबर 9752877615 अथवा ई-मेल tolic.raipur.drm@gmail.com पर प्रेषित करें ताकि हम इसे और बेहतर बना सकें । यह ई-पत्रिका द.पू.म.रेलवे की वेबसाइट में भी उपलब्ध है ।

मंडल की गतिविधियां संबंधी विवरण एवं फोटोग्राफ्स जनसंपर्क अनुभाग, रायपुर से साभार ।